F-11
D.El.Ed 1st year

MUSIC

संगीत के वाद्य यन्त्रों का परिचय

* भारतीय वाद्यों को चार श्रेणियों में बाँटा गया है :—

1. तंत वाद्य,
2. सुषिर वाद्य,
3. अवनद्ध वाद्य,
4. घनवाद्य।

विभिन्न वाद्य यन्त्रो का परिचय

1. **तबला** — यह लकड़ी का बना होता है। जैसे आम, खैर, शीशम, चन्दन, बबूल कटहल और बजैसार की लकड़ी का बना होता है। इसके नीचे का भाग प्रायः आठ इंच, ऊपर का सात इंच तथा ऊँचाई लगभग एक फुट होता है। जो तबला नीचे स्वर से बड़ा होता है, वह तबला ऊँचे स्वर में मिलाया जाता है। तबले का काठ जितना भारी होगा, तबला अधिक गूँज वाला होगा।

तबले को मुख्यतः दो भागों में बाँटा जा सकता है- (1) दाहिना, (2) बायाँ। जो भाग दाहिने हाथ से बजाया जाता है उसे तबला कहते हैं और जो बाएँ हाथ से बजाते हैं, उसे डग्गा कहते हैं।

2. **सितार** — अमीर खुसरो ने सितार का आविष्कार किया और तानसेन के पुत्र सुरतसेन के वंशज अमृतसेन और निहालसेन ने इनका संशोधन तथा परिवर्द्धन किया। सितार में सात तार होती है यह तार-वाद्य अर्थात् तंत वाद्य की श्रेणी के अन्तर्गत आया है।

3. **तानपूरा** — गायकों के लिए तानपूरा एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तार-वाद्य अर्थात् तत वाद्य है। इसमें किसी गाने की सरगम नहीं निकलती, केवल स्वर देने के लिए ही इसका प्रयोग किया जाता है। गायक अपने गल धर्मानुसार इसमें अपना स्वर कायम कर लेते हैं और फिर इसकी झंकार के सहारे उनका गायन चलता रहता है। इसमें चार तार होते हैं।

Scanned with CamScanner

4- बाँसुरी — बाँसरी भारत का अति प्राचीन फूंक वाद्य यन्त्र है। बाँसुरी में 6-7 सुराख होते है जिनसे स्वरों की ध्वनियाँ निकलती है। बाँसुरी के आगे का मुख्य भाग थोड़ा सँकरा होता है जिसके द्वारा फूँक दी जाती है। यह बाँस की बनी होती है।

5. मृदंग — मृदंग बीया, सवन, सुपारी और बडला (बड़), आदि पेड़ो की लकड़ी से बनता है। इसका मुँह एक तरफ से चौड़ा और दूसरी तरफ से सँकरा होता है। इस पर बकरे की खाल चढ़ती है नारी की तरफ स्याही लगी हुई होती है और नर की तरफ आटा। इसका उपयोग ज्यादातर धार्मिक स्थानों मन्दिरों, आदि में होती है। इसकी आवाज अति मधुर होती है। रावियें और रावलो की बजाने की शैली अलग है रावियें लोग इसके साथ झाँझ बजाते है

6. सारंगी — लोक वाद्यों में सारंगी का छोटा रूप मिलता है। यह सागवान, केर और रोहीड़ा वृक्षों की जड़ो से बनाई जाती है। किसी-किसी के माथे में खूँटियाँ होती है। उपर की तांतें बकरे की आँतो की बनी हुई होती है। इसमें तेरह तुरपें होती है उपर तुरपों की खूँटियों से बाँध दिया जाता है। सारंगी को गज से बजाते है। गज में घोड़े की पूँछ के बाल बँधे होते है। लोक गायन सारंगी बजाते हुए उसके साथ गाते है

7. वीणा — यह भी एक तार वाद्य अर्थात तत वाद्य है। इसका प्रयोग शास्त्रीय संगीत व सुगम संगीत में किया जाता है। वीणा वाग्देवी सरस्वती व नारद का भी मुख्य वाद्य यन्त्र रहा है।

Scanned with CamScanner